

मध्यवर्ग का अन्तर्विरोध और हरिशंकर परसाई का व्यंग्य-साहित्य

प्रो. अनिल कुमार राय (शोध-निर्देशक)

मीरा चौहान (शोधार्थिनी)

हिंदी विभाग

हिंदी विभाग

दी.द.ऊ.गो.वि., गोरखपुर

दी.द.ऊ.गो.वि., गोरखपुर

शोध सरांश: व्यंग्य का प्रयोग मानवीय जीवन और जगत् से विसंगतियों को दूर करके उसमें सुधार

करना होता है। व्यंग्य की सबसे बड़ी विशेषता सामाजिक परिष्कार है और यह सामाजिक परिष्कार व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई की रचनाधार्मिता के केंद्र में है। उन्होंने समाज में व्याप्त विसंगतियों, आडम्बरों, कुंठाओं और शोषण उत्पीड़न के विविध रूपों पर अपनी व्यंग्य-दृष्टि से रोचक एवं सजग प्रहार किया है। समाज के उच्चवर्ग को छोड़कर प्रत्येक वर्ग के लिए उनके मन में करुणा का भाव है, लेकिन मध्यवर्ग के लिए करुणा के साथ-साथ उसके दोहरेपन, बनावटीपन, आडम्बर और विसंगतियों से आहत होकर उन्होंने उस पर प्रहार किया है तथा उसमें अपने लेखन के माध्यम से सुधार और परिष्कार का प्रयास किया है।

बीज शब्द: रचनाधार्मिता, व्यंग्य, मध्यवर्ग, विसंगति, विडम्बना, भ्रष्टाचार, शोषण, संस्कृति, आर्थिक, समाज, विषमता, प्रगतिशील, जनता, उदारीकरण, सामाजिक आदि।

मूल आलेख: विश्व में मध्यवर्ग का उदय सांमंती व्यवस्था के पतन, अठारहवीं सदी की औद्योगिक क्रांति और आधुनिक शिक्षा (मैकाले की शिक्षा-नीति) के प्रसार का परिणाम है। पाश्चात्य देशों में मध्यवर्ग औद्योगीकरण की उपज था, जबकि भारत में इसकी शुरुआत औपनिवेशिक शिक्षा और प्रशासनिक व्यवस्था के परिणामस्वरूप हुई। भारत में आर्थिक उदारीकरण (1991 के बाद) ने देश की अर्थव्यवस्था और मध्यवर्ग को पूरी तरह बदल दिया। इसके फलस्वरूप ग्रामीण मध्यवर्ग और शहरी मध्यवर्ग के बीच एक बड़ा अंतर पैदा हुआ।

साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य और समाज के एक-दूसरे के पूरक हैं। जब सामाजिक परिवर्तन होता है, तो साहित्य में भी परिवर्तन होता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' ग्रंथ में लिखा है- "प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चितवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है, तब वह निश्चित है कि जनता की चिन्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है।" ¹ आधुनिक काल में साहित्य जीवन के अधिक निकट आया; जीवन की जटिल समस्याओं को झेलते हुए, साहित्यकार ने गहराई में यथार्थ के बोध को अधिक गहरे से अनुभव किया और आधुनिक साहित्य में जीवन के विविध प्रकरणों को जीवन यथार्थबोध देने वाली व्यंग्य-विधा का प्रादुर्भाव हुआ, जिसमें महत्वपूर्ण योगदान हरिशंकर परसाई का था। इन्होंने व्यंग्य-शैली को स्वतंत्र विधा का महत्त्व दिलाया।

हरिशंकर परसाई 'नई कहानी' के दौर के साहित्यकार हैं। आलोचक डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी के इस कथन से उद्धटित होता है- "परसाई 'नई कहानी' के दौर के कहानीकार हैं। उनकी कहानियाँ उस दौर के कहानीकारों से अलग हैं। परसाई की रचनाओं का मिशन होता है। वे लेखन से व्यक्ति और समाज की विसंगतियों का उद्घाटन करते हैं। उद्घाटन का आंतरिक उद्देश्य उन विसंगतियों का शमन होता है। इसीलिए परसाई घोषित करते हैं कि मैं शाश्वत साहित्य नहीं लिखना चाहता। मैं ऐसा साहित्य लिखना चाहता हूँ, जो आज लिखूँ और कल मिट जाए। यानी रचना का आधार, विसंगतियाँ समाप्त हो

जाएँ।² हरिशंकर परसाई ने मध्यवर्ग का उपहास उड़ाने के बजाए उनकी पीड़ा, विवशता और उनके मनोविज्ञान को बहुत गहराई से समझा है। उनका उद्देश्य इस वर्ग की कमियों को उजागर करके उसे आईना दिखाना और उसमें सुधार लाना था।

मध्यवर्ग जो आजादी के बाद नये रूपों में उभर रहा था, उतनी ही तेजी से उसमें सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विसंगतियाँ जन्म ले रही थी। डॉ. नगेन्द्र द्वारा संपादित पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' से उद्धाटित अंश है- " मध्यवर्गीय कवियों ने व्यक्ति-मन के सत्यों को उद्धाटित करने में ही नये सत्यों की प्रतीति और उनका सम्प्रेषण समझा। मध्यवर्ग आज ह्रासोन्मुख है। वह अपने चारों ओर के कठोर परिवेश के दबाव से टूट रहा है। उसकी आकांक्षाएं विराट् हैं, सपने रंगीन हैं, संवेदनाएं कोमल हैं। वह अपने चारों ओर खड़ी कठोर सामाजिक बन्धनों और आर्थिक वैषम्य की अभेद्य दीवारों से टकराकर अपने में लौट आता है और अपने को समाज से कटा हुआ, हारा हुआ, खण्डित और कुण्ठित समझने लगता है, पीड़ा के अनेक स्तरों से उलझी हुई संवेदनाओं को मन को गहरा यथार्थ मान बैठता है। यह मध्यवर्गीय व्यक्ति या कवि जन-जीवन के सामूहिक जागरण से असम्पृक्त रहने के कारण अपनी सीमाओं को तोड़ने का कोई सक्रिय प्रयास न करके 'स्व' की गुफा में पीड़ा की मणि खोजता रहता है।"³

मध्यवर्ग वह वर्ग है, जो न पूँजीपति है न मजदूर। यह वेतन भोगी वृद्धिजीवी, क्लर्क, शिक्षक, वकील, डॉक्टर और छोटे दुकानदारों का वर्ग है, जो अंग्रेजी शिक्षा और नए प्रशासन की देन है। हजारों प्रसाद द्विवेदी भी अपने ग्रंथ 'हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास' में लिखते हैं- "आधुनिक काल में हिंदी साहित्य का पाठक और लेखक, दोनों मध्यवर्ग से आए। इसीलिए इस काल का साहित्य समस्या प्रधान और यथार्थवादी हो गया।"⁴ हरिशंकर परसाई भी मध्यवर्गीय परिवार के संघर्ष से उपजे लेखक हैं। अभाव उनके जीवन का हिस्सा रहा है; और उस संघर्ष से उत्पन्न हुई पीड़ा, भय, त्रासदी को उन्होंने खुद समझा और महसूस किया है।

यह मध्यवर्ग वह वर्ग है, जो उच्चवर्ग की तरह जीना तो चाहता है, परन्तु मजदूर की तरह डरता भी है। परसाई ने मध्य वर्ग के इसी अन्तर्विरोध यानी भीतर के टकराव को अपनी व्यंग्य-दृष्टि का विषय बनाया है। मध्यवर्ग के व्यक्ति का व्यक्तित्व बड़ा ही विचित्र होता है एक और उसमें उच्चवर्ग की आकांक्षा होती है तो दूसरी ओर निम्नवर्ग की दीनता। अहंकार और दीनता से मिलकर बना उसका व्यक्तित्व बड़ा विचित्र होता है, एक और वह उच्च वर्ग के सामने दुम हिलाता है तो दूसरी तरफ निम्नवर्ग के सामने शेर बन जाता है। ऐसी ही विसंगति को परसाई अपनी कहानी 'एक मध्यवर्गीय कुत्ता' में उद्धाटित करते हैं- " मुझे इसके वर्ग पर शक होने लगा है। यह उच्चवर्गीय कुत्ता नहीं है। मेरे पड़ोस में ही एक साहब के पास ये दो कुत्ते। उनका रोब ही निराला। मैंने उन्हें कभी भौंकते नहीं सुना। आस-पास कुत्ते भौंकते रहते, पर वे ध्यान नहीं देते थे। कभी मैंने उनकी एक धीमी गुर्राहट ही सुनी होगी। वे बैठे रहते या घूमते रहते। फाटक खुला होता, तो भी बाहर नहीं निकलते थे। बड़े रोबीले अहंकारी और आत्मतुष्ट।"⁵ यह सीधा व्यंग्य उस मध्यवर्ग पर है, जो समाज में हो रही दुर्व्यवस्था पर आवाज नहीं उठाता है उन्हें अपने समय और समाज की कोई चिंता नहीं होती और जो केवल अपनी बनावटी दूनिया और अपनी जरूरतों में ही व्यस्त है।

परसाई ने 'प्रेमचन्द्र के फटे जुते' निबन्ध के माध्यम से भी उन लेखकों और मध्यवर्ग पर व्यंग्य किया है, जो व्यवस्था से समझौता कर लेते हैं और पूँजीवादी शक्तियों के विरुद्ध आवाज बुलंद नहीं कर पाते तथा बाह्य आडम्बरों में फँसे रहते हैं- " मेरा जूता भी कोई अच्छा नहीं, यों ऊपर से अच्छा दिखता है। अँगुली बाहर नहीं निकलती, पर अँगूठे के नीचे तला फट गया है। अँगूठा जमीन से घिसता है और पैनी गिट्टी पर कभी रगड़ खाकर लहलुहान भी हो जाता है। पूरा तला गिर जाएगा, पूरा पंजा छिल जायगा, मगर अँगुली बाहर नहीं दिखेगी। तुम्हारी अँगुली दिखती है, पर पाँव सुरक्षित है। मेरी अँगुली ढकी है, पर पंजा नीचे घिस रहा है। तुम पर्दे का महत्त्व ही नहीं जानते, हम पर्दे पर कुर्बान हो रहे हैं!"⁶

परसाई के इसी व्यंग्य-दृष्टि को रेखांकित करते हुए राजेंद्रचन्द्र कांत राय कहते हैं- “परसाई जी के पास एक सुनिश्चित विचारधारा का परिप्रेक्ष्य और दृष्टि थी, इसीलिए उनके लेखन में, हँसने के लिए हँसी और कटाक्ष करने के लिए व्यंग्य न आता था। वह चरित्रों और उनके चारित्रिक आचरणों की गहरी शिनाख्त करने के लिए ही आता था। वे अपने लेखों और कहानियों में जिन विसंगतियों का पर्दाफाश करते थे, वह बाहरी विद्रूप मात्र का अनावरण न होकर, अंदर की पूरी पोस्टमार्टम रिपोर्ट ही हुआ करती थीं।”⁷

समाज की विसंगतियों व विडंबनाओं का कारण शायद मध्यवर्ग ही है। परसाई ने मध्यवर्ग पर केवल कटाक्ष नहीं किया, बल्कि उनकी पीड़ा को समझा भी है। उनकी आर्थिक असुरक्षा, छोटे-छोटे सपनों का टूटना, व्यवस्था के सामने नपुंसकता, नौकरी जाने का डर, महंगाई की मार, परम्पराओं को ढोने का बोझ, भ्रष्टाचार का सामना, नौकरशाही में पिसना, बेरोजगारी, दहेज, नैतिक दुविधा आदि समस्याओं से जूझते आम आदमी के दर्द और उसकी मनःस्थिति को अपनी रचनाओं का वर्ण्य-विषय बनाया है। जैसे-‘भोला राम का जीव’ में नौकरशाही से पिसते मध्यवर्गीय क्लर्क की त्रासदी, फाइलों में उलझा आय आदमी। ‘सदाचार का ताबीज’ में महीने के अंत में सैलरी खत्म होने के भय से पैदा होने वाले अनैतिकता, बाहर सदाचार, भीतर भ्रष्टाचार। ‘बेईमानी की परत’ निबन्ध में मध्यवर्ग की दोहरी जिन्दगी का चित्रण का अंश दृष्टव्य है- “ उच्चवर्गी और मध्यवर्गी में यही अन्तर है। उच्चवर्गी का पैण्ट जब छोटा होता है, तो वह उसे आगे के लिए छोड़ देता है। पर मध्यवर्गीय का कुछ ‘आगे’ के लिए नहीं होता; इसलिए वह स्त्री की फटी साड़ी की किनार खोजने लगता है।”⁸ ‘सेवा का शौक’ कहानी के माध्यम से समाज-सेवा के नाम पर शिक्षक के शोषण पर व्यंग्य है- “ गरीब आदमी के घर में कला और संस्कृति की बातें नहीं होती। भूखे की कला-संस्कृति और दर्शन पेट के बाहर कहीं नहीं होते हैं।”⁹ ‘गेहूँ का सुख’ निबन्ध में लिखते हैं- “ लेकिन अब कुछ लोग गेहूँ से गुलाब की खेती करना चाहिए। जहाँ उजड़े हुए गेहूँ के खेत हों, वहाँ गुलाब की फसल की काम आयेगी ?”¹⁰

प्रेमचंद्र ने किसान-मजदूर का दर्द लिखा तो परसाई ने नौकरीपेशा मध्यवर्ग का दर्द लिखा जो सदैव सीमित आय और महंगाई के बीच फंसा रहता है। गोदान का होरी सामंती व्यवस्था से लड़ता है तो परसाई का भोलाराम नौकरशाही के फाइलों से लड़ता है। परसाई की रचनाओं के पात्र उनके आस-पास के समाज के आम आदमी हैं। उनकी रचनाओं में अधिकांश घटनाएँ निम्न और मध्यवर्ग से जुड़ी होती हैं, जो सार्वजनिक स्थानों पर घटती हैं, इसलिए उसके पात्र इन्हीं में से एक होते हैं। निम्नवर्गीय पात्रों का ऐसा चित्रण प्रेमचंद्र के बाद शायद परसाई ने ही किया है।

दहेज प्रथा एक जटिलतम विसंगति है, जो मध्यवर्ग में अपनी जड़ों को काफी मजबूती से फैला रही है। यह विसंगति परसाई के अन्वेषणात्मक दृष्टि से बच ना सकी। ये विचार उनकी कहानी ‘हमारे समाज में वर-विक्रय’ में उद्धृत है- “ विवाह-सा पवित्र बन्धन जो पारस्परिक प्रेम बढ़ाकर दो परिवारों को अधिकाधिक समीप लाता था, न जाने कब से वाणिज्य बनकर रह गया ? और आज खुलेआम वर की विक्री होती है जिसकी कीमत कन्या के रूप-गुण से नहीं, वरन् उसके पिता के टकों से लगायी जाती है।”¹¹

परसाई वह रचनाकार हैं, जो उत्तम सामाजिक संरचना के लिए सदैव जूझते हुए प्रयासरत रहे। उनके साहित्य को पढ़ने के बाद ऐसा लगता है की उनका एक मात्र उद्देश्य व्यवस्था-परिवर्तन है। ‘मेरी कैफियत’ लेख में वे कहते हैं- “ मैं इसलिए लिखता हूँ कि व्यक्ति और समाज आत्मसाक्षात्कार और आत्मलोचना करें और अपनी कमजोरियाँ, बुराईयाँ, विसंगतियाँ, विवेकहीनता, न्यायहीनता त्यागकर जैसा वह है, उससे बेहतर बने। अंधविश्वासों, झूठी मान्यताओं, अवैज्ञानिक आग्रहों और आत्मघाती रूढ़ियों से मुक्त हो। वह न्यायी दयालु, संवेदनशील हो। दासता और परमुखापेक्षिता से मुक्त हो। मानव गरिमा की प्रतिष्ठा हो।”¹² यही परसाई की रचनाधर्मिता है और इन्हीं विसंगतियों व अन्तर्विरोधों को वह अपनी व्यंग्य-दृष्टि का आधार बनाते हैं।

निष्कर्ष: परसाई प्रगतिशील विचारधारा के रचनाकार हैं। इस विचारधारा से प्रतिबद्ध होने के कारण

उनकी दृष्टि सीमित या संकुचित न होकर व्यापक और पैनी हो गयी है। इसलिए वह छोटी-सी रचना में भी संपूर्ण समाज और भारत ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व की वास्तविकता पर नजर रखते हुए समकालीन यथार्थ का रोचक किन्तु सार्थक और सचेत बनाने वाला चित्रण करते हैं। मध्यवर्ग का अन्तर्विरोध परसाई के साहित्य में नये परिप्रेक्ष्य उभरता है। परसाई को पढ़ते हुए अनुभव होता कि वह जिन मुद्दों पर लिख रहे थे आज भी उन्हीं मुद्दों से हम सब घिरे हुए हैं और उसके दलदल में अन्दर तक धसते चले जा रहे हैं। परसाई का साहित्य पढ़ते हुए हमारे सामने कुछ स्वाभाविक प्रश्न उठते हैं, जो हमारे भूत, वर्तमान और भविष्य से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं।

संदर्भ-ग्रंथ-सूची:

1. शुक्ल, रामचन्द्र (2010) : ' हिन्दी साहित्य का इतिहास ' , विजयप्रकाश मन्दिर , वाराणसी-1
पृ. सं. 16
2. त्रिपाठी, विश्वनाथ (2024) : ' देश के दौर में ' , राजकलम पेपर बैक्स , नई दिल्ली , पहला संस्करण
पृ. सं. 131
3. नगेन्द्र (2004) : 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' , मयूर पेपरबैक्स , नोएडा , तीसवां संस्करण , पृ.सं.628
4. द्विवेदी, हजारीप्रसाद (1952) : ' हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास ' , राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली , पृ. सं. 267
5. परसाई रचनावली खण्ड-1 (2023) , राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली , आठवां संस्करण , पृ. सं. 26
6. परसाई रचनावली खण्ड-3 , पृ. सं. 33
7. राय, राजेन्द्र चन्द्रकान्त (2023) : ' काल के कपाल पर हस्ताक्षर ' , सेतु प्रकाशन , नोएडा , प्रथम संस्करण , पृ. सं. 04
8. परसाई रचनावली खण्ड-3 , पृ. सं. 79
9. परसाई रचनावली खण्ड-2 , पृ. सं. 234
10. परसाई रचनावली खण्ड-3 , पृ. सं. 205
11. परसाई रचनावली खण्ड-6 , पृ. सं. 301
12. वही पृ. सं. 221